[परम [illegible] साहब जी महाराज]

R. S.

॥ मनुष्य बनो ॥

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णं मुदच्यते ।
पूर्णस्यः पूर्णमादाय पूर्ण मेवाव शिष्यते ।

वर्ष १४	सितम्बर सन १९६६ भादों सं० २०२३ वि	सं० १२/१६८

मंगला चरण गुरु का उपकार

गुरु को कीजे दन्डवत, कोटि कोटि परनाम ।
कीट न जाने भृंगि को, गुरु कर लें आप समान ॥१॥
सतगुरु के परताप से, मिट गया दुख सुख द्वन्द ।
कहैं कबीर दुविधा मिटी, मिले गुरु रामानन्द ॥२॥
चार खान में भरमता, कबहूँ न लगता पार ।
सो तो फेरा मिट गया, सतगुरु के उपकार ॥३॥
पाछे लागा जाय था, लोक वेद के साथ ।
रस्ते में सतगुरु मिले, दीपक दीन्हा हाथ ॥४॥
भली भई जो गुरु मिले, नहीं तो होती हान ।
दीपक जोत पतंग ज्यों, पड़ता आय निदान ॥५॥
भली भई जो गुरु मिले, उनसे पाया ज्ञान ।
घट ही मांहि चबूतरा, घट ही मांहि दिवान ॥६॥
ज्ञान प्रकाशी गुरु मिला, सो जनि बिसरो जाय ।
जब गोविन्द कृपा करी, तब गुरु मिलिया आय ॥७॥

[गतांक से आगे]

मैंने दाता दयाल जी की आज्ञा नुसार जो कुछ शिष्य और गुरू की दृष्टि से अपने साधन और अभ्यास से अनुभव किया और इस ज्ञान के आधार पर अनेक सज्जन व मित्र जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से दुखी थे उनका पथ प्रदर्शन किया।

काम दाता दयाल जी का। हनमकुन्डा सत्संग घर बना, दयाल नन्दू भाई जी को सौंप दिया। राधा स्वामी धाम निजन था। समाधि बनी। स्कूल का प्रबन्ध श्री कुबेर नाथ मुख्तार जो दाता दयाल जी के प्रेमी शिष्य थे, उन्हें सौंप दिया। और मानवता मंदिर पीरे मुगां साहब को सौंप दिया। विश्व प्रेमी मुन्शी लाल जी और उन के भाई साहिबान और परिवार वाले दाता दयालजी के अत्यन्त प्रेमी थे। अपना अधिकांश धन राधास्वामी धाम में व्यय किया। क्योंकि "विश्वप्रेमी" स्वयं दाता के अत्यन्त प्रेमी थे। मैंने उनकी और उनके परिवार की आंख खोलने के लिये "मनुष्य बनो" पत्रिका प्रचलित करने का कार्य दिया। जिससे इनके अन्तर अज्ञान की गुरु भक्ति हो वह समाप्त होजाये और इनको जीते जी वास्तविकता, अथार्थता, सत्यता और सचाई का दर्शन प्राप्त होजाये।

संसार वाले ? जो कुछ मैंने समझा है और जो कुछ सन्त मत की शिक्षा का उच्च ध्येय है, उसको दृष्टि में रखते हुए मैं यह समझता हूँ कि रोचक व भयानक बातें जो संतमत में सम्मिलित हैं। इनके कारण ,निबल अबल और आज्ञानी जीव लुटे जारहे हैं। मैं, स्वयं इस अज्ञान वश इस भावुक संसार में रहता हुआ स्वयं लुट गया था, किन्तु दाता दयाल जी ने सम्भाला। जहां तन, मन धन की सेवा का उल्लेख है, वहां जीव उसके रहस्य को न समझ कर अज्ञान वश कार्य करते हैं। तन, मन, धन की सेवा का वास्तबक भाव यह है कि मानव को यह ज्ञान होजाय कि तन,मन, धन वास्तव में उसका नहीं है। सेवा के बिना हमारी सामाजिक अवस्था

स्थिति नहीं रह सकती। इसलिये मैं चाहता हूँ कि प्राणी सो समझ कर एक दूसरे की सहायता करे, एक दूसरे के काम आये सत संगियों की सेवा और भक्ति ही वास्तव में गुरु भक्ति और सेवा है।

मैं आशा रखता हूँ कि विश्व प्रेमी इस मनुष्य बनो के काम को जब तक उनका जीवन है अपने हाथ में रखते हुए जो सेवा मानव की कर सकते हैं कर जायें मेरे समस्त साहित्य को प्रकाशित कर सकते हैं।

श्री देवी चरन मीतल दाता दयाल के प्रेमियों मेंसे हैं और मुः नौनिध राय के सेवक रहे हैं। चूंकि इनकी इस लाइन का खब्त है और वह इन विचारों के बिना रह नहीं सकते इसलिये इनको 'शिव' का काम दिया गया। मैंने अपने समस्त साहित्य का कापी राइट इन को दिया हुआ है और वह भी बिना किसी मुआवजे के। मैं आशा करता हूँ कि वह मेरे विचारों को स्थित रक्खेंगे। समय आरहा है जब संसार इस धार्मिक और पांथिक लूट मार से तंग आकर वास्तविकता और सचाई की खोज करेगा। उस समय यह मेरे विचार मानव जाति के सच्चे पथ प्रदर्शक होंगे। 'दयाल' और 'शिव' की संरक्षकता दयाल नन्द भाई जी के हाथ में है, जैसा चाहें वैसा करें।

पीरे मुगाँ साहब के बचनों का साराँशः—

पीरे मुगाँ साहब ने गुरू की आरती करने के पश्चात वर्णन कियाः—

नजा रख उसकी रहमत पर, न घबरा डूबने वाले।
इसी दरिया में तूफां है, इसी दरिया में साहिल है॥

किसी समय भाई जी, पंडित जी महाराज और मेरे बीच वार्तालाप में यह निश्चय किया गया कि सतसंग का कार्य प्रचलित रहना चहिये। चूंकि पंडित जी महाराज का स्वास्थ आज कल

ठीक नहीं है। मुझे आदेश मिला है कि मैं सतसंग के कार्य को चलाता रहूँ। मैं भी अब नव युवक अवस्था में नहीं हूँ। तो भी सेवा के विचार से मैंने इस काम को करना स्वीकार कर लिया है। मैंने उनके पत्र के उत्तर में हाल ही में लिखा है कि यदि मुझे देहली से होशियार पुर सिर के बल भी आना पड़ा तो आऊंगा।

यह प्रेम का सौदा है। यहां हृदय का काम है। मेरा काम सब को साहस देना और टूटे दिलों को जोड़ने का है। यदि मेरे सतसंग से किसी को घृणा उतपन्न हो तो मैं उसे धिक्कारता हूँ।

मैंने दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज से अत्यन्त लाभ प्राप्त किया। और जहां तक हो सका उनकी आज्ञा का उल्लघन नहीं किया सिवाय एक बारके जबकि वह करांची जाते हुए मुझे जाखल स्टेशन पर उन्होंने जब वहां उतरा और नमस्कार की तो कितना ही रुपया नोटों के रूप में देना चाहा, किन्तु मैंने लेने से मना कर दिया। वह मुझे निर्धन समझकर मेरा ध्यान रखते थे। मानो कि मेरी निर्धनता उनके ध्यान के अंग को बदलने का कारण थी और मेरी यह दशा थी कि उनके दरबार में जाकर मुझे बड़ा आनन्द आता था। एक ओर के तीसरे दर्जे के किराये के पैसे मेरे पास हो जाते तो मैं घर से दाता दयाल जी के दर्शनों के लिये गाड़ी में सवार हो जाता। इससे अधिक मुझे और कोई चिन्ता न हुआ करती थी। अबतो उनकी अपार दया से मेरे यहां किसी प्रकार की कमी नहीं है। फिर भी केवल सेवा के विचार से मैंने सतसंग कराने के काम के लिये पंडित जी महाराज को हां कर दिया है।

मैं अपने हृदय का भाव फिर स्पष्ट किये देता हूँ कि मैं यहां सेवक के नाते से आऊंगा और मुझे अधिक चिट्ठी पत्री लिखने की भी टेव नहीं, जितनी अधिक से अधिक सेवा मैं किसी दुखिया की कर सकता हूँ, प्रसन्नतापूर्वक करूंगा। मैं मालिक पर विश्वास और भरोसा रखने वाले व्यक्तियों में से हूँ। और यह जानता हूँ कि

वह जिसे कंगाल बनाये और जिसे चाहे धनी। किसी को मूर्ख और किसी को ज्ञानी बनाना भी उसके अधिकार में है। मानव विश्वास की कमी के कारण दुखी होता है। वरन् दुखी होने का कोई कारण नहीं।

यह नश्वर संसार है। सावधान। यहां स्थाई रूप से रहने का विचार पक्का न कर लेना वरन् दुख के अतिरिक्त और कुछ हाथ न आयेगा।

चिन्ता करना व्यर्थ है। नास्तिक होना त्रुटि है। चिन्ता करने की अपेक्षा बल पौरुषसे कार्य करना कहीं श्रेष्ठ है। हम खुली आंखों से देखते हैं कि यहां कोई न कोई नियम काम कर रहा है, जिससे पृथ्वी और आकाश और इसमें होने वाले कार्य व्यवसाय चल रहे हैं। ऐसी दशा में फिर उसके अस्तित्व से इन्कार कैसा ?

बिना समय आये और अधिकार के किसी को कुछ नहीं मिलता इसलिये पहले अधिकारी होना अनिवार्य है।

जब हम किसी शक्ति के आधीन हैं जैसा कि अभी कबीर साहब की वाणी से पढ़ा गया है और हम स्वयं कुछ नहीं कर सकते तो फिर चिन्ता करना व्यर्थ है। जो मौज से होता है होने दीजिये। अपनी ओर से कर्तव्य के पालन में कसर नहीं छोड़िये।

सबसे उत्तम मौनता है बक बक और वाद विवाद में क्या रक्खा है। बात संक्षेप में और मतलब की हो और बस।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि दाता मेरी भक्ति सकाम हो जिससे कि मुझे भी इस काम से सुख शान्ति मिले।

मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ और आप सब भी प्रार्थना करें कि मालिक पंडित जी महाराज की दीर्घ आयु करें। कबीर साहब की भांति जो कि १२०-१२५ वर्ष की थी और आप प्रफुल्लित रहें।

इस पर पंडित जी महाराज ने फिर वचन करना आरम्भ किये और वर्णन किया "होय है वही जो राम रचि राखा" हम तीन

भाई हैं मैं, नन्दूसिंह जी और पीरे मुंगा साहब। हम तीनों दाता के दरबार से लाभान्वित हुए। सगे भाइयों में भी आजकल अनबन हो जाती है किन्तु हम तीनों इस अनबन से मुक्त हैं।

मेरी बीमारी की सुनकर यह दोनों भाई नन्दूसिंह जी निजामाबाद से और पीरे मुंगा देहली से तुरन्त ही होशियारपुर चले आये इससे सिद्ध हुआ कि यह प्रेम का सौदा है। प्रेमीजन परस्पर सहानुभूति, प्रेम और प्रीति का व्यवहार किया करते हैं पीरे मुंगा साहब ने तो विशाल हृदय से यहां के सतसंग के काम को सम्भालने की स्वीकृति दे दी है। अब भाई जी का आशीर्वाद चाहते हैं। इस पर नन्दू भाई जी उठे और वर्णन करने लगे। भाइयो! यह सतसंग का मिशन जो चल रहा है। दातादयाल जी का ही चलाया हुआ नहीं बल्कि इससे पूर्व स्वामी जी महाराज की परम पुनीत विभूति ने चालू किया था। आप पूरण पुरुष थे मुझे अटल विश्वास है कि यह मिशन जब तक सूर्य चन्द्रमा स्थिर हैं चलता ही रहेगा। इसे कोई बन्द नहीं कर सकता। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आप सबको सुख शान्ति मिले। यही बार बार मालिक से प्रार्थना है। किन्तु बन्दे को इतनी भली पड़ा रहे दरबार" अर्थात मानव मालिक की इच्छा पर रहने की टेव डाले यदि उसे सुख शान्ति लेनी है तो बस। सब को राधा स्वामी।

इस पर फकीर साहब ने वर्णन किया मित्रो। आज सतसंग में १० मिनट अधिक ले लिये गये है। सतसंग १० बजकर १० मिनट पर समाप्त हुआ है कोई बात नहीं। नारियल, कपड़ा और ११ रुपये प्रेम और श्रद्धा से पीरे मुंगा साहब को फकीर साहब ने भेंट किये, जो उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक झोली में डलवा लिये। महाराज जी ने फिर प्रवचन आरम्भ किये। सन १९१९ में दातादयाल जी ने मुझे ५ पैसे और १ नारियल नतमस्तक होनेके पश्चात भेंट किये और आचार्य तथा गुरु पदवी का कार्य सौंपा। उस समय उन्होंने मुझे कहा था

फकीर यह न समझना कि तुम किसी का बेड़ा पार करोगे बल्कि यह समझना कि तुम किसी का बेड़ा पार करोगे या भला करोगे बल्कि यह समझना कि सतसंगियों के रूप में तुमको गुरु के दर्शन होंगे। वह मुझे हो गये। मेरी वर्णन शैली भिन्न है। में सचाई का नग्न चित्र सबके समक्ष वर्णन कर दिया करता हूँ। जिससे कि बुद्धिमान वर्ग या समझदार मानव बात को सही रूप में समझकर अपना काम बना सके। मैंने शिक्षा को अपने स्पष्ट वर्णन से परिवर्तित कर डाला है। सन १९३३ में सुनाम स्टेशन के सतसंग में मुझे दातादयाल जी का आदेश हुआ था फकीर ! धर्म, पंथ, सरप्रदायका रूप बदल जायगा, तुम चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। उस समय पीरे मुंगा व मामचन्द भी वहां उपस्थित थे। मुझे उन्होंने यह नहीं बतलाया था कि शिक्षा में कैसे परिवर्तन होगा अतः जो मेरी समझ में आया मैंने सतसंगों में कह दिया। मेरा आज तक का यह समस्त कार्य दाता दयाल जी के सन १९३३ के दिये हुए संस्कार का परिमाण है।

इस पर पीरे मुंगा साहब फिर बोले और वर्णन किया कि हम सबको पंडित जी महाराज की दीर्घ आयु की प्रार्थना करनी चाहियें मैंने जब से आपकी बीमारी का हाल सुना मुझे नींद नहीं आई। सत्संग समाप्त हुआ। सभा विसर्जित हुई।

हमारा बचन या विश्व प्रेमी का कथन

वर्ष चौदहवां समाप्त है, सतगुरु के उपकार।
प्रेसों के उत्पात की, बड़ी रही भरमार॥
कठिनाई सब दूर की, सतगुरु सत दातार।
दया मेहर पर आपकी, जाऊं मैं बलिहार॥
तुम समान दाता नहीं, देखा जगत मंझार।
तुम रक्षक हो हर घड़ी, टेरत बारम्बार॥

दुखी जीव की दौड़ है, तुम तक सर्वाधार।
और नहीं उसका कोई, कुल कुटम्ब परिवार॥
ऐसे ही करते रहो, मेरा यह तुम कार।
और नहीं कोई लालसा, राधास्वामी परम दयार॥

मालिक का लाख २ धन्यवाद है कि यह हमारा १४ वां वर्ष इस अंक के साथ २ सकुशल समाप्त हो रहा है। जिन प्रेमी पाठकों ने हमें सहयोग दिया है और इस शुभ कार्य में हमारा हाथ बटाया है हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। मालिक उनकी मनोकामनायें पूर्ण करे। सकल मनोरथ सिद्ध हों। यही हमारे "शुभ संकल्पम् अस्तु" का तात्पर्य और मंतव्य है। ऐसी ही भावना बनी रहे।

भावना जिनकी है जैसी, वैसा उनका हाल है।
दोनों ही अच्छे बुरे का, मन में रहता ख्याल है।
एक और हालत है ऐसी, इस दुख सुख के परे।
हम क्या सभी कहते हैं उसको, वह तो देश दयाल है।

परन्तु यह दशा मनुष्य बनने के पश्चात ही प्राप्त होती है। अब आप स्वयं सोचें कि इस पत्रिका के पढ़ने और सतसंग करने से आप में क्या क्या परिवर्तन हुए?

बदलते बदलते बदल जायेंगे।
अगर उनका कहना बजा लायेंगे।
तो सेवक से स्वामी भी बन जायेंगे।
फिर होकर मगन अपने घर जायेंगे।
बदनामी नेकनामी, दोनों की क्या है परवा।
दिल में समा गया जब, उल्फत के तेरे सौदा।
जी चाहे जो करालें, हमें काम से गरज है।
अच्छा हो या बुरा हो, फिर कैसे होंगे रुस्वा॥

हमारे यहां पांच पर्व मनाये जाते हैं। देहली में दशहरा, रा स्वामी धाम और बिलारी में भी। बसन्त, हैदराबाद हनमकुन्डा अं

मध्य प्रदेश में। शिवरात्रि, दयाल धाम, दयाल नगर अलीगढ़ में और बैसाखी मानवता मन्दिर होशियार पुर में। जहां जिनकी सुविधा हो वह अपना वार्षिक मूल्य देदिया करें। परन्तु फिर भी अनेक सज्जनों को अपने वार्षिक मूल्य देने तथा भेजने का ध्यान नहीं रहता। हम कहां तक पत्र व्यवहार करें? सोचिये आप का क्या कर्तव्य है? क्या दो दो भी ग्राहक देकर अपना तथा दूसरों का उपकार नहीं कर सकते? सत् गुरू सब का कल्याण करें।

मेरी अन्तिम आयु की रहनी। ले० परम दयाल जी

जीवन में कहां से चला था, और कहां आया? जब इस पर ध्यान देता हूँ तो जो परिवर्तन मुझ में आया, वह मुझे आश्चर्य में डालता है। बाह्य प्रभाव जब पड़ते हैं तो अनेक बार विचार आता है कि मैं पतित होगया तथा गिर गया। वह गिरना क्या है?

बचपन से अपने मन के किसी न किसी प्रकार के श्रद्धा-विश्वास के सहारे जीवन बिताता था। जब आचार्य पद पर आने से जो जो अनुभव मुझ को हुए, उन्हों ने मुझे विवश कर दिया है कि यह जितना मेरा धर्म कर्म, श्रद्धा विश्वास, साधन और अभ्यास था। जिसके सहारे मैंने अपना जीवन बिताया है, वह सब का सब मेरे अपने हीं मन की कल्पना, माया और बुद्धि का खेल सिद्ध हुआ। इस मन, चित, बुद्धि और अहंकार के परे एक और अवस्था है जो प्रकाश और शब्द का मंडल है। उसका अनुभव हुआ। किन्तु मौज अथवा मेरी शारीरिक और मानसिक प्रकृति मुझको इस मन के खेल में लाती रहती है। और शरीरमें आने के कारण दूसरों से मेल मिलाप, वार्तालाप होता रहता है। जिसको मेरा सुभाव तथा जी अब चाहता नहीं। किन्तु विवशतः किसी शक्ति के अन्तरगति घसीटा जाता हूँ। शारीरिक और मानसिक जीवन अप्रिय होगया, ज्ञात नहीं क्यों? मेरा अस्तित्व अब तक स्थित है? बहुधा यह उलझन मुझको अशान्ति देती है। इस अनुभव के आधार पर सोचता हूँ

फकीर सोच तूने इस गुप्त रहस्य को जो खोला है, इससे दूसरों को कोई विनेष लाभ नहीं हो सकता। क्योंकि इस ननुभव के होने के पश्चात कि यह शारीरिक और मानसिक जीवन एक कल्पना है और जो ऐसा समझ जायेंगे वह मेरी भांति इस संसार से उदासी न हो जायेंगे तो उनका जीवन नीरस अन आनन्द मय होजायगा।

किन्तु मैंने इस रहस्य को केवल उस आदेशानुसार जो दाता दयाल जी ने मुझे निबल, अबल और अज्ञानी जीवों के लाभार्थ और जगत कल्याण हेतु सौंपा था, उस क्रम में खोला है। शारीरिक और मानसिक खेल इस मन के ऊपर आधारित है। मेरे विचार में यदि मानव जाति को यह ज्ञान होजाय तो मानव मन के अहंकार में न आकर अपना जीवन जहां जिसका विश्वास हो रख कर, दूसरों को अपने २ विशवस के अनुसार जीने दे, तो हमारा धार्मिक और पांथिक द्वेष और मत-भेद समाप्त होसकता है। और यह धार्मिक उनमत्तता जिसके प्रभावों से यह मानव जाति बंट चुकी है, जो इसके बुरे परिणाम भारत वर्ष में हम पर व्यक्त हुए हैं, उन में कमी आसकती है। और साथ ही अज्ञान और भ्रम के कारण जो हम धर्मों और पन्थों में फंसकर लुटे जारहे हैं. हम बच सकते हैं। व्यक्ति जीवन का अनुभव सिद्ध करता है कि हमारे इस लुटने में हमको प्रसन्नता मिलती है। उदाहरणतः स्त्री है, इसके साथ प्रेम करने से हमारा स्वाथय भी जाता है, धन भी हम उसके लिये व्यय करते हैं और फिर जब सन्तान होजाती है तो इसके पालन पोषन आदि में कितने कष्ट झेलने पड़ते हैं, किन्तु हमारी प्रकृति हमको उनके मोह-ममता से छुटने नहीं देती।

मैं सोचता हूँ- अरे उन्मत्त और बौरे! संसार को इस वस्तु की आवश्यकता नहीं क्या तेरा कार्य निष्फल नहीं है? किन्तु ज्ञात नहीं क्यों मैं इस ओर घसीटा जारहा हूँ? यह मेरे वश की बात नहीं बहुधा इसी सोच में विसमाधि आजाती है। समस्या हल नहीं ह

अन्त में यह समझ कर कि मालिक की मौज, उसकी इच्छा, समझ कर जीवन के अन्तिम आयु के दिन काटता हूँ। जहां तक होसक ता है शरीर को भूले रहता हूँ। मि ो! मैंने जीवन में बहुत सचाई निष्कपटता, और निष्कामता से चलते हुए किसी गुप्त रहस्य और भेद को समझा है। मेरा एक विश्वास था कि द.ता दयाल जी की पवित्र-पुनीत विभूति मेरे लिये उस ऊंचे से ऊंचे लोक से इस चले में आये थे। पहिले तो विश्वास का मेरे पास कोई प्रमाण नहीं था अब मुझे प्रमाण मिल गया कि मेरा बिश्वास ठीक था।

उस शुद्ध स्वरूप ने मुझको यह काम दिया था। मैंने काम किया। शिक्षा की वर्णन शैली को बदल दिया। मैं नहीं कह सकता कि मेरे काम का क्या परिणाम हो? इन मेरे विचारों तथा वर्णन शैली जिससे कि मानव के शंका, सन्देह और भ्रम समाप्त होते हैं और जीवन बिताने का सही मार्ग मिलता है, जन साधारण पर क्या प्रभाव हो? फिर भी मैंने जो कुछ किया वह अपने हृदय से दूसरों के लाभ के लिये किया। यदि उस मालिक को स्वीकार है तो मैं चाहता हूँ कि भारत वर्ष में मानवता आये और हमारा धार्मिक मत भेद दूर हो। और हम संगठन, एकता, और प्रेम का जीवन बिताते हुए अपनी जीवन यात्रा सफल करें। केवल इसी विचार को लेकर मैंने काम किया, और प्रत्येक रुप से प्रयत्न किया कि मानव का अज्ञान दूर हो। शेष जीवन के दिन इसी आशा में बिताता हूँ।

भयंकर रोग में ग्रस्त था बचगया अब ६० प्रतिशत ठीक हूँ। सिद्ध होता है कि प्रकृति और कुछ दिन काम लेना है। सच्चे हृदय चाहता हूँ कि प्राणी मात्र को शान्ति मिले।

आनन्द विषय:—ले० भोला बालक॥

मैं हूँ भोला बाला बालक, गुरु की गोद रहूँ दिन रात ॥ टेक ॥
चिंता जग की मुझे न व्यापे, हर्ष हर्ष हर्षात।

बोझ उतारा काल का सिर से, मंद मंद मुसकाता ॥टेक॥
बाहर भीतर लख गुरु मूरत, चित में रूप बसात ।
गुरु गम निरख परख कर हरषूं, दुख मन में नहीं आत ॥ टेक ॥
गुरू मेरे भाई सगे सगाई, गुरु मेरे पितु और मात ।
गुरु सम्बन्धी मीत प्यारे, गुरू का सिर पर हाथ ॥ टेक ॥
यक रस जीवन समय बिताऊं, क्या जाड़ा बरसात ।
गुरु की शरण मिली गुरु कृपा, गुरु ही जाति और पांति ॥टेक॥
राधा स्वामी गुरु ने अंग लगाया, दिया प्रेम की दात ।
अब तो सफल भइ नर देही काल करे नहीं घात ॥ टेक ॥

लेखक दाता दयाल जी का भोला भाला बालक था और है। क्यों? यह वही जानते होंगे। क्या वह भोला भाला था ? उत्तर-हां और नहीं दोनों में ही दिया जासकता है। अधिक समय बीत चुका है। कह नहीं सकता। सम्भव है यह शब्द दाता जी ने मेरे ही नाम लिखा हो। ऐसा कहने से अहंकार उत्पन्न होता है जो संत मत की शिक्षा के विरुद्ध है। इस कारण साहस नहीं होता। न आप ने मुख से मियाँ मिट्ठू ही बनना चाहता हूँ। Self praise is no recommendation बाह्य रूप में तो भोला भाला बालक नव युवक था, पर आंतरिक दशा ऐसी न थी। गुण, अव गुण, बुराई भलाई प्रकाश-अन्धेरा, सच-झूठ, हानि-लाभ आदि-आदि द्वन्द अवस्थायें विद्यमान थीं। गुरु महाराज की अपार दया से यह निश्चय हो चुका था कि केवल भलाई- सचाई गुण, आश विश्वास को ही अपनाया जाय, तब ही जीवन सार्थिक हो सकता है। पर मानव विवश है। मन के दोषों के कारण दुखी रहता है। मन सदा चंचल है। नियंत्रण में नहीं रहता। यद्यपि दाता दयाल जी ने बहुत कुछ सरल, सुगम उपाय मन के साधन के लिये, दूसरों को सुमिरन-ध्यान और मुझे सदैव काम मेंव्यस्थ रहने का गुर बताया था। और कहा था काम ही जीवन है और जीवन ही काम है।

वह अन्तरयामी थे . जानते थे कि बालक की शिक्षा अधूरी रही है इसलिये आदेश था कि खूब काम करो। यदि दिन में १२ घन्टे भी काम हो तो रात को कम से कम ४ घन्टे पढ़ाई लिखाई भी हो और यही मेरे लिये नाम दान था। नाम की महिमा मैं क्या जानूं काम की महिमा ने ही मेरा काम बनाया। जिसका लोक बनगया उस का परलोक भी बनगया। उनके विचारों और संस्करों का गहरा प्रभाव बालक पर पड़ा और वह कुछ का कुछ बनगया। कोई विघ न बाधा नहीं पड़ती थी। संसार और परमार्थ दोनों की एक समान साधन क्रिया चलती रहती थी। पता ही नहीं चलता था कि समय कब आया और कब गया।

अमल से जिंदगी बनती है, जन्नत भी जहन्ननु भी।
यह खाकी अपनी फितरत में, न नूरी है न नारी है॥
पिताजी की इनायत से, मिला दरबार में जानां।
नजर मुर्शिद की पड़ते ही अभी तक वह खुमारी है॥
मगर इस रम्ज के काबिल, नहीं हैं वह सगे दुनियां।
हकीकत में उन्हें तो बस इसी की चाह भारी है॥

यहां दक्षिण में आया, वही दाता दयाल जी हुजूर दयाल नन्दू भाई जी महाराज के शुद्ध स्वरूप में संरक्षक हैं। नहीं तो कुछ न पूछो इस भव सागर के जाल में बुरी प्रकार फंसा हुआ पड़ा था।

"यल पेल रक्षक जीव के, सत गुरु दाता दयाल"
भाई जी के रूप में, करते मेरी संभाल॥
भवसागर जल विष भरा, मन में थे उत्पात।
शब्द सनेही पिऊ मिला, विष अमृत होजात॥
प्रीत बहुत संसार में, नाना विधि से कीन।
उत्तम प्रीति है सतगुरू, उस में हुआ लीन॥
जब गुरु भक्ती हम करी, तब कुछ पाया जान।
सुरत शब्द तारी लगी, रात दिवस गल्तान॥

बने तो सतगुरु से बने, नहीं बिगड़े भरपूर।
तुलसी बने जो और ते, ता बनिबे पर धूर॥
गुरु चेला एक संग में, करते बचन विलास।
गति मति का कुछ भेद नहीं, वही गुरु वही दास॥
परम पिता की दया से, मिल गये दाता दयाल।
लोक बना परलोक भी, सब विधि किया निहाल॥
जैसे दिन मेरे फिरे, सबके फेरो नाथ।
तुम समरथ हो सांईयां, चरन झुकाऊं मांथ॥
तुमने अस किर्पा करी, दिया ठौर ठिकाना।
काल की फांसी कट गई, मिला शब्द प्रमाना॥
तुम मेरे समरथ सतगुरू, सच्चे दातारा।
हित चित से करूं बन्दगी, तुम हो परम उदारा॥
तुम ब्रह्मा तुम विष्णु हो, तुम शिव त्रिपुरारी।
तुम्हरे सुमिरन मात्र से, काल गया हारी॥
श्रद्धा और विश्वास से, लेता तुम्हरा नाम।
जब कोई बिपता पड़ी, आड़े आये काम॥
अब इतनी है लालसा, लेलो अपनी गोद।
जगत चबेना काल का, मन मानत परमोद॥

सतसंग के वचनों को पान करने से, मन, बचन, कर्म शुद्ध और पवित्र होते हैं। यही सच्चा तीर्थ राज है। यहीं जाकर मन की शुभ भावना पूरी होती है। जीवन सुधर जाता है, निखर जाता है, और हम चाहें तो इसी जीवन में अपने परम पद और आदर्श को प्राप्त कर सकते हैं। हमने तो दाता दयाल जी और परम पिता जी के सम्पर्क से यही सीखा है।

करनी कर रहनी रहे, रहनी उत्तम सार।
रहनी सहज समाध है, कहें कबीर विचार॥
करनी का अभ्यास कर, कथनी को तजि डार।

कहें कबीर तब पाइये, सतगुगु का दीदार ॥
यह करनी का भेद है, सतगुरु दिया बताय ।
कथनी बदनी त्याग कर, करनी सों लौ लाय ॥

हमने तो काम तथा करनी को ही मुख्य समझ रक्खा है ।

यही है दिललगी अपनी, यही दिल बस्तगी अपनी ।
उन्हीं का काम करते हैं, उन्हीं की बन्दगीं अपनी ॥
इसी को काम कहते हैं, इसी को जिन्दगी अपनी ।
कि तेरा नाम आया और, गर्दन झुक गई अपनी ॥
तुम्हारा नाम लेकर. खैरो बरकत चाहते हैं हम ।
अगर चे जानते हैं. बेनिशा और लापता तुम हो ॥
तुम्हारा नाम लेने से. जमाना जान जाता है ।
मैं वह खोई हुई एक चीज हूँ, जिस के पता तुम हो ॥
मैं अपने आप को खोकर, पता तब उनका पाता हूँ ।
मगर मैं कह नहीं सकता, पता या ला पता तुम हो ॥
तुम्हीं कहदो तो कुछ जानूं, बगरना बहुत मुश्किल है ।
तुम्हीं मेरे मसीहा हो, हर मरज की दवा तुम हो ॥

पर करें क्या? इस धर्म, पंथ वादी वानोवृत्ति ने बटवारा कर रक्खा है । कोई कहता मेरा मत अच्छा है और कोई कहता है मेरा अच्छा । कहते हैं हम कि "आप भला तो जग भला" न कोई अच्छा न कोई बुरा यह आपेक्षिक शब्द हैं । इनके जाल में क्यों फंसते हो ? हमारा ज्ञान अधकचरा है, और संशय,सन्देह से भरा है वरन् ज्ञान में भले बुरे का क्या काम?

न कोई बुरा है, न कोई भला है ।
बुरे में खुदा है, भले में खुदा है ॥
खुदा जब है दोनों में, तो झगड़ा है किसका ।
खुशी से गरज हो तो, रगड़ा है किसका ॥
यह हैं निस्बती लफ्ज. निस्बत को समझो ।
अगर कुछ समझ है, हकीकत को समझो ॥

इस हकीकत अर्थात वास्तविकता की समझ कैसे आई?

जब लग ठोकर कर्म की, लगे न तन मन आय।
तब तग मूरख के हृदय, ज्ञान योग न समाय॥

मैं मूरख, अज्ञानी था। कर्मों की ठोकर लग लग कर परम पिता जी की शरन मैं आया। तब यह ज्ञान योग तथा सहज योग हाथ आयो और अब सुखी हूँ।

अज्ञानियों को ही तो, ज्ञान का अधिकार है।
जिनको सतगुरू मिल गया, फिर उनका बेड़ा पार है॥

पूरन ज्ञान होगया। यह उनकी दया है।

—:—

हर चीज पर है चश्मे इनायत तेरी।
हर अमर में मौजूद है रहमत तेरी॥
मां बाप से भी बढ़कर तेरा रुत्बा है।
खालिक है तू मखलूक है खिलकत तेरी॥

—:—

दिल में मिरे हर आन तेरा मस्कन है।
पुर गौहरे मकसद मिरा दामन है॥
मिलतीं है हर चीज मुझे आप ही आप।
खालिक की इनायाता का दिल मरूजन है॥

अखिल भारतीय बोर्ट्स कौंसिय के जलसे में श्री सत्य सघ्त कृपाल सिंह जी महाराज का भाषण;—

आपने कहा कि २० वर्ष के पुराने खिलाड़ी जो प्रजातंत्र की ऊंच नीच को समझते हैं, वहभी इस बात का भान कर रहे हैं कि हमारा प्रजातंत्र अभी अधूरा है, और उसमें सुधार की आवश्यकता है। कुरानशरीफ में आता है कि ईश्वर उस जाति की दशा को नहीं बदलता, जिसे आप अपनी दशा को बदलने का विचार नहीं है। तो यह बोधभान आज उत्पन्न हो रहा

है प्रजातन्त्र की अपूर्णता का, उसमें सुधार का। यह जागृति प्रभू की ओर से है, और प्रमाण है इस बातका कि दशा अवश्य सुधरेगी। भारत के नागरिक होने के नाते मुझे इस सम्बन्ध में रुचि है, और मैं चाहता हूँ कि सच्चा प्रजातन्त्र अर्थात जनता का राज्य जनता के लिये, ऐसा गणराज्य यहां स्थापित हो, और उसकी जड़ें दृढ़ हों, जिससे सबके लिये सुख चैन का कारण बने।

बेईमानी, भ्रष्टाचार, घूंसखोरी, छल कपट आदि जो कुरीतियां बुराईयां हम देखते हैं, उसका कारण यही है, कि हम वास्तविक रूप में मनुष्य नहीं बने। मनुष्य नाम है आत्मा-देहधारी का। मनुष्य-मनुष्य सब एक हैं। मनुष्य शरीर, मन बुद्धि और आत्मा रखता है। तीनों अंगों तथा रूपों से जो पूर्ण हो वही सही अर्थों में मनुष्य है। शारीरिक रूप में व बौद्धिक रूप में हमने बड़ी भारी उन्नति की। पर आत्मा के सम्बन्ध में हम कुछ नहीं जानते। यद्यपि आत्मिक स्वास्थ्य पर हमारा शारीरिक और मानसिक जीवन निर्भर है। यदि हम सही अर्थों में मनुष्य बन जायें, अपने आपको (शरीर रूपी घर के निवासी, आत्मा को, जो हमारा अपना आप है) जान लें, सबमें एक (प्रभू को, और एक में सबको देखने वाले हो जायें तो फिर कौन किसी का गला काटेगा, कौन किसी को धोखा देगा? यह शत्रुता, द्वेष, ईर्षा धड़ेबन्दी कहां रहेगी?

प्राचीन काल में इसीलिये राजाओं के सलाहकार ऋषि मुनि हुआ करते थे वह शासन और प्रजा के बीच एक कड़ी का काम करते थे। अब भी किसी जिज्ञासू की बुराई भलाई का निर्णय तथा न्याय आत्मिक पुरुष ही कर सकते हैं और वही प्रत्येक प्रकार के डर भय, दबाव, अथवा लोभ लालच से मुक्त होकर निर्णय दे सकते हैं मत दाताओं को मत देने के सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्व का भान कराने और चुनाव की कुरीतियों को दूर करने का काम अत्यन्त आवश्यक है। मैं समझता हूँ सब भाई इस सम्बन्ध में मिलकर

विचार करें। कमेटियां चुनी जायें जो इस सम्बन्ध में सुझाव तैयार करें, जिस पर सितम्बर में होने वाली कान्फ्रेंस में विचार करके एक क्रियात्मक कार्यक्रम नये चुनाव से पूर्व तैयार कर लिया जाय।

कलाम पीरेमुगां साहब

खुदा से आप ही शैतान का जहूर हुआ।
अन्धेरा शमा के नीचे, छुपा जो नूर हुआ।
वजूद रुह ही से, जिस्म का भी होगा नमूद।
नहीं है रुह तो फिर, जिस्म खुद ही दूर हुआ॥
गिरेगा गिरके न संभलेगा, होगा ख्वारो जलील।
जिये जो अपनी खुदी का, कभी गरूर हुआ।
फना बका में बका में फना, है तुम समझो।
वह सूफी है जिसे इस इल्म पर अबूर हुआ।
बनाके आईना दिल, दिल को साफ मत भूलो।
लगी जो ठेस जरा दम के दम में चूर हुआ॥

असर लुभाने का प्यारे, तेरे बयान में है।
किसी की आंख में जादू, तेरी जबान में है॥
निशान मिलता है सिर्रे खफी का, दिल से तेरे।
न वह मकां में नहीं, जर्फ में, जमान में है॥
खुदा अगर है कहीं, दिल में तेरे, वह है मकीं।
न अर्श फर्श न वह कोन में है, मकान में है॥
सुना जो वहदतो कसरत का गुर, जबां से तेरे।
समझ लिया कि तनो जिस्म रुहो, जान में है॥
खुदा करे तेरी सौहबत, नसीब हो दायम।
कि तेरा सानी नहीं, कोई इस जहान में है॥

स्वतन्त्रता दिवस पर जग कल्याण हेतु

परम दयाल जी का लेख १५-८-६६

यह चेतन का बुलबुला फकीर मौजाधीन, जिस प्रकार और संसार के जीव हैं, कर्मवश अपना भगवत इच्छावश, अपना २ कार्य करते हैं, इसी प्रकार वह भी करता है। मैं बचपन से अपने आधार जहां से यह चेतन का बुलबुला बना है, उसकी खोज करता आ रहा हूँ। इस खोज के क्रम में मेरा एक विश्वास था कि दातादयाल महर्षि विवब्रतलाल जी वर्मन ए०० ए० जो उस सर्वाधार के ज्ञान स्वरूपी अवतार थे इस विश्वास के अन्तरगत मैंने उस शुद्ध स्वरूप से प्रेम किया। उन्होंने मेरा कर्म जो मुझे करना चाहिये, उसका संकेत किया। यह क्या काम था ? वह था—निर्बल, अबल और अज्ञानियों की सहायता करना और जगत का कल्याण। इस कर्म के क्रम में मैंने अधिकांश काम किया है। आज स्वतन्त्रता दिवस है। देश के अन्तर बहुत कुछ उन्नति, आविष्कार आदि हुए किन्तु देश की बढ़ती हुई जनसंख्या खाद्य पदार्थ की न्यूनता. भ्रष्टाचार, बेईमानी, घूंसखोरी, छल-कपट, मिलावट, आदि अत्यन्त बढ़ गई है। अनेक बार सोचता हूँ कोई उपाय? हां ! वह है अनुभव वह ज्ञान कि सृष्टि कैसे बनती है, कैसे नाश को प्राप्त होती है ? इस ज्ञान के आधार पर कहता हूँ कि यह भ्रष्टाचार, घूंसखोरी, धोखेबाजी, मिलावट अथवा संसार की जनसंख्या की वृद्धि का रोकना इन वर्तमान परिस्थितियों में असम्भव है। क्यों ? कि मानव के जब संतान उत्पन्न होती है तो वह माता पिता के आहार, विचार और संस्कार लेकर आता है। जब वह बड़ा होता है तो बाह्य संस्कार बच्चों, मित्रों, अध्यापकों आदि से लेता है। जैसी जैसी संगत उसको मिलती जाती है वैसा वैसा प्रभाव उसके मन पर पड़ता रहता है।

"संग दोष से कोई न बाचे, ऋषि मुनि योगी ज्ञानी ध्यानी"

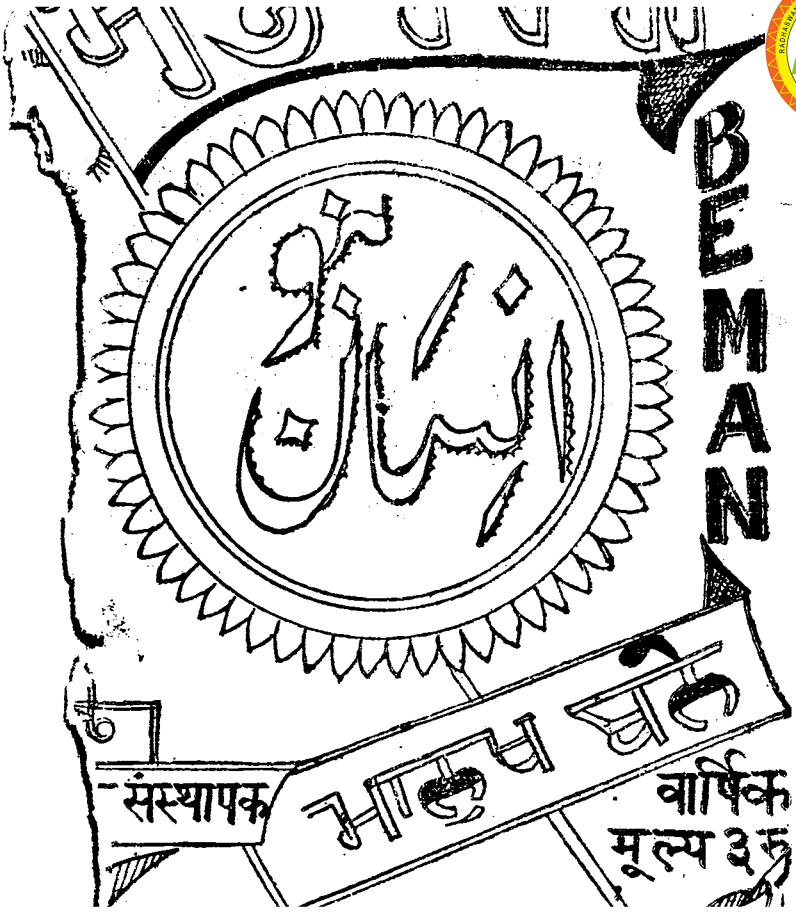

انسان
BEMAN
संस्थापक
वार्षिक
मूल्य

मानव के अन्दर से जैसा वह होता है वैसी रेडियेशन निकलती रहती है। इस भ्रष्टाचार अथवा अन्य अवगुणों की जो वृद्धि इस समय देश में है यह तो तभी रुक सकते हैं जब इस प्रकार के संस्कार बाहर से न आयें। तो इस समय प्रत्येक माता पिता किसी न किसी रूप से मानसिक और आत्मिक दृष्टि कोंण से शुद्ध-पवित्र और निर्मल नहीं है। इसी प्रकार अन्य मित्रगण सबके सब मानसिक और आत्मिक रूप से शुद्ध पवित्र नही हैं। यही कारण है कि इस समय जितनी अनुशासन की कमी विद्यार्थियों में है वह कहीं दृष्टि गोचर नहीं होती। क्योंकि इन बच्चों की उत्पत्ति उन माता-पिता से है जो स्वयं अनुशासनहीन रहे हैं। काम के वशीभूत होकर बिना सोचे समझे स्त्री-पुरुष भोग करते हैं जिससे कि अयोग्य और भाग्यहीन संतान उत्पन्न हो जाती है। इस सन्तान से यह आशा रखना कि वह अनुशासन में रहे प्रकृति के नियम के विरुद्ध है। विद्यार्थियों का कोई अपराध नहीं खट्टे से खट्टा और मिट्ठे से मिट्ठा उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त मानवीय प्रकृति है कि जब वह संसार के उतार-चढ़ाव से तंग आकर अपनी शान्ति, सुधार उन्नति आदि के लिये विचार करता है तो वह प्राकृतिक रूप में धार्मिक जगत के जो गुरु नेता या पथ प्रदर्शक हैं उनकी संगत करने का इच्छुक होता है। मेरा निज अनुभव, जो कुछ मैंने सच्चे शिष्य और सच्चे गुरु के नाते प्राप्त किया वह बताता है कि यह धार्मिक और पान्थिक पथ प्रदर्शक जिनके पास संसार के अशान्त प्राणी शान्ति को प्राप्त करने के लिये या अपने जीवन की गढ़ना के लिये जाते हैं वह स्वयं क्रियात्मक रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं हैं। मैं यह लिखना नहीं चाहता था किन्तु चूंकि मुझे जगत कल्याण का कर्तव्य सौंपा हुआ है, मैं गुरु ऋण से उऋण होने के लिये अपना कर्तव्य पूरा करना चाहता हूं। प्रमाण स्वरूप मैं अपने जीवन के अनुभव वर्णन किये करता हूँ, कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। किन्तु इस समय ये

जिसने धार्मिक और पान्थिक पथ प्रदर्शक हैं, यह सचाई से व
नहीं लेते। और जीवों के मानसिक खेलों जो उनके अन्तर होते ए,
जो कि वास्तव में प्रत्येक के मस्तिष्क पर बाह्य प्रभावों के संस्कारों
का परिणाम होता है। किन्तु यह जाने तथा अनजाने श्रेय स्वयं
लेते हैं और इस प्रकार का प्रोपेगेन्डा किया जाता है कि जीव बेचारे
इनके विश्वास क्षेत्र से बाहर न जा सकें। स्वयं सोचो ! क्या ऐसे
महापुरुष उस हेरा फेरी. जिस हेरा फेरी का युग इस समय देश में
है, उससे वंचित हैं। किसी ने मिलावट करके या ब्लेक करके धन
कमाया, किसी ने दूसरों को अज्ञान में रखकर अपना नाम मान
प्रतिष्ठा और धन प्राप्त किया, तो कैसे यह आशा की जा सकती है
कि संसार से यह भ्रष्टाचार, धोकेबाजी, मिलावट आदि समाप्त हो
सकती है। असम्भव है। देश के कर्णाधार, सामाजिक, राजनैतिक
नेता प्रयत्न कर देखें, किसी रूप में भी सफलता नहीं हो सकती
और न होगी जब तक कि संसार के अन्तर जन साधारण को
संस्कार ही अच्छा न मिलेगा। इसलिये यह वर्तमान प्रजातन्त्र
किसी रूप में भी देश में सौख्य और शान्ति न ला सकेगा। शासन
की बागडोर जिनके हाथों में है यह स्वयं साधन सम्पन्न नहीं हैं।
शासन चाहता है कि विद्यार्थी अनुशासन में रहें। क्या यह ऐस-
म्बलियों में स्वयं अनुशासन में रहते हैं ? क्या होता है ऐसम्बलियों
में ? कैसा व्यवहार हो रहा है ? वर्तमान प्रजातन्त्र की प्रणाली देश
में सुख शान्ति नहीं ला सकती। रह गया प्रश्न जन संख्या का।
वर्तमान परिवार नियोजन का प्रयास पुरुषों की नस नाड़ी बन्दी या
स्त्रियों का लूप आदि एक क्षण मात्र का उपचार है। जब तक कि
मानव के मन की गढ़त न की जाये तब तक अनुशासन असम्भव
है। मैं क्या करूं ? यदि मुझको प्राकृतिक ज्ञान न हुआ होता।
प्रकृति स्वयं चिकित्सा कर डालती है मेरा ज्ञान मुझको कह रहा
है। सम्भव है मैं त्रुटि पर हूँ। मुझे दावा किसी बात का नहीं। मैं

खोजी हूँ। समय आ रहा है जब यह मानव जाति भ्रष्ट हुए बिना न रहेगी और कोई उपाय, उपचार, संकल्प शक्ति के अनुसार मेरी समज में आ नहीं रहा। जनता में शान्ति की इच्छा विद्यमान है। अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिये और उपाय नहीं कि जन संख्या कम हो जाये, और भ्रष्टाचार समाप्त हो जाये। चूंकि और कोई उपाय नहीं इसलिये मांग और पूर्ति के नियमानुसार प्रकृति ऐसा प्रबन्ध अवश्य करेगी जिससे कि जन संख्या कम हो और भ्रस्टाचार भी कम रहे। इसलिये मैं कहता हूँ कि मानव जाति का नाश होना अनिवार्य है।

एक उपाय मेरी समझ में अधिक समय से आया था कि यह जो धार्मिक और पारथिक जगत के बड़े-बड़े महा पुरुष हैं उनको एक मच पर एकत्रित करके उनका सुधार किया जाये और उनको सही मार्ग पर लाया जाये। जिससे कि जब यह स्वंय साधन-सम्पन्न और सत्यता के रुप हो जायेंगे तो उनकी रेडियेशन से, उनकी शिक्षा से संभवतः कुछ सुधार संसार का हो सकता था। किन्तु इसकी ओर ध्यान नहीं। प्रत्येक धर्म, पन्थ का लीडर अपने आश्रम, अपनी मान-प्रतिष्ठा को छोड़ने के लिये तैयार नहीं। में जानता हूँ कि तूती की आवाज नक्कार खाने में सुनी नहीं जाती। आज नहीं तो नष्टता के पश्चात तो संसार संभवतः इस ओर आये। इस लिये गुरु आज्ञा को परा करता हुआ अपना भाव छोड़े जा रहा हूँ। डाक्टर राधा कृष्नन इस समय के महा पुरुष हैं। उनके स्वतंत्रता दिवस के संदेश में शब्द थे कि ईमानदार और स्वच्छ, निर्मल शाशन यह काम कर सकता है। विचार सराहनीय और धन्य हैं किन्तु जब तक ये धर्म और पंथ जो भारतवर्ष के जीवन की गढ़न करने वाले हैं, जब तक इनका सुधार नहीं होता सफलता मेरी समझ में भीनहीं आती मालिकसे प्रर्थना हैकि मैं इस भविष्य में आनेवाले संकट से पहले ही इस शरीर को त्याग जाऊं। यदि बुध्दिमान वर्ग

कुछ कर सकता है तो इस पर विचार करें और इस डेमोक्रेसी डेमोक्रेसी लाने का प्रयत्न करे। इसके सम्बन्ध में औटो डेमोक्रेसी क्या है यदि जीवन ने साथ दिया तो बता जाऊगां।

हक और गैर हक

क्या कहे जब कहने वाले को जबां मिलती नहीं।
क्या करे कोई बयां, हद्दे बयां मिलती नहीं।
कहने वाले कहते कहते, थक गये और चुप हुये।
सोचने वाले समझ कर, सोचकर गुप चुप हुये॥
जब्बीयत में पाओगे, तुम महवीयत का क्या पता।
लापता का क्या पता हो, लापता है बेपता॥
योगियों ने योग में, क्या पाया इस्तगराक को।
खोगये गुम होगये, अक्लो तमीजो होश खो॥
अपने को गुम करना हो, उसकी करो फिर तुम तलाश।
यह नहीं होने का हरगिज, राज मुखफी फाश फाश॥

समय के सत गुरु परम दयाल जी महाराज

दाता दयालजी को कोटिर धन्यवाद है, जिन्होंने दया करके यह आचार्य पदवी देकर मेरे भ्रम और अज्ञान को मिराकर, मुझे अपने नि न स्वरूप के मिलाप का अवसर प्रदान किया। यदि मुझे यह गुरु पदवी न मिलती तो सम्भवतः मुझे कितने और जन्म इस काल माया के चक्कर को समझने में बिताने पड़ते। समझ तो मैं गया, निकलने का प्रयत्न भी करता रहता हूँ। परन्तु अभी काल और माया के देश में विश्राम है। क्यों है ? सम्भवतः इसीलिये कि दूसरों को निकलने का मार्ग बता सकूं।

आज डा० जगजीत सिंह M.B.B.S. टांडा निवासी जो आज कल रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान, जर्मनी, इटली आदि के भ्रमण

करने के लिये गये हुए हैं, उनका पत्र वहां से आया। मैं चकित हो गया, क्योंकि मुझे ज्ञात नहीं था कि वह बाहर गये हुए हैं; कभी विचार तक भी नहीं आया कि वह संसार में हैं भी या नहीं। डा० लिखते हैं कि आपके दर्शन प्रतिदिन हो जाते हैं। आज बहुत सुन्दर रूप में दर्शन हुये। सत्संग हुआ। और खूब हुआ। शरीर तो मानव के लिये आवश्यकीय है। किन्तु इसमें बसने वाली आत्मा सर्व-व्यापक, सर्वशक्तिमान, निर्मल, चिदाकाश स्वरूप के लिये दूरी और समुद्र पार की सीमा व्यर्थ है। आपसे मिलकर भ्रमण के लिये इधर आ निकला, मन में संकल्प था, सो पूरा हुआ। रूस में एक सप्ताह रहा। अब फ्रांस, जमनी, इटली, डेनमार्क होता हुआ कनाडा जाऊंगा और फिर अमरीका होता हुआ जापान, मलाया आदि होता हुआ फिर आपके दर्शन करूंगा वैसे तो प्रत्येक समय आप मेरे साथ होते हैं- वार्तालाप करते हैं, सत्संग कराते हैं आदि २।

पत्र पढ़ा। दातादयाल जी, परम तत्व के ज्ञान स्वरूपी अवतार की कृतज्ञता स्मरण हुई, जिन्होंने यह काम देकर मुझे इस कैाल जाल से निकलने का मार्ग बताया। वह कैसे ? देखो संसार वालो और वर्तमान महापुरुषो जो गुरु गद्दियों पर विराजमान हैं। अपने अन्तर प्रवेश करके सोचें तो वह जो फकीरचन्द डाक्टर के अन्तर दर्शन देता है, उसको सत्संग कराता है, वार्तालाप करता है वह कौन है ? मैं तो होता नहीं, मुझे तो यह भी पता नहीं था कि यह डा० कब परदेश को गया। वह कौन था फकीर ? जो उसके अन्तर दर्शन देता है ? वह है उसका अपना ही आत्मा, जिस प्रकार के भाव, विचार मानव के मस्तिष्क पर होते हैं, वही फुरते हैं। इस बात को परदे में रखकर इन महात्माओं ने संसार को अज्ञान रखकर अपनी त्रुटिपूर्ण मान-प्रतिष्ठा प्राप्त की है। यह जितना सब खेल है, यह आन्तरिक मन का है। सहस दल कमल, त्रिकुटी सुन्न महा सुन्न भंवर गुफा यह क्या हैं।

आदि माया कीन्हीं चतुराई। झूंठी बाजी सांच दिखाई ॥

आज मुझको निश्चय होगया पहले भी था। किन्तु अब अटल विश्वास होगया कि यह सब खेल बाह्य और आन्तरिक मानव के विचार का है। मैं कभी राधास्वामी मत की पुस्तकें सत कबीर की वाणियां पढ़ा करता था। उनमें पूरे गुरू की प्रशंसा की गई है। पूरा गुरू कौन है? जो मानव की सुरत को इस माया के जाल से निकाल कर अपने ही रूप में ठहरा देता है। यदि मैं दातादयाल जी की पवित्र पुनीत विभूति को परम तत्व का ज्ञान स्वरूपी अवतार कहता हूँ तो त्रुटि नहीं करता। किन्तु इस पूरे ज्ञान का संसार अधिकारी नहीं है। मैंने यह रहस्य क्यों खोला? इसलिये कि संसार के अन्तर निबल, अबल और अज्ञानी जीव इस माया के चक्र में आकर अपने अज्ञान वश लुटे जा रहे हैं। इस प्रकार की रूपरेखायें रंग जिनके अन्तर प्रगट होती हैं, वह चूंकि उनको सत्य मानते हैं और जिनके रूप प्रगट होते हैं, वह वास्तविकता बताते नहीं और यह जीव बिचारे अपने अज्ञान से उनके बोझ भार के पशु बन जाते हैं और इस अज्ञान के कारण अनेक प्रकार के धर्म, पंथ और गद्दियां बन गई हैं। और मानव जाति इस भ्रम और अज्ञानवश बंट चुकी है, इसलिये चूंकि मैं समय का संत सत्गुरु हूँ। मुझे निबल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता का भार सौंपा हुआ है और जगत कल्याण का काम है, इसलिये मैंने इस रहस्य को खोला है। जिससे कि मानव जाति इस मन के चक्र, भ्रम और अज्ञान के रूप को समझ जाये और अपना सम्मान करना आप सीखे। फिर मनुष्य बनकर जीये और दूसरों को जीने दे।

ऐ दातादयाल! परम तत्व! सत्गुरु! आपने जो मुझे आज्ञा दी उससे मेरा अपना कल्याण हुआ। आपके आदेशानुसार मैंने निश्चय, निस्वार्थ होकर काम कर दिया। इसका क्या परिणाम होगा, यह तेरी मौज जानती है।

ऐ संसार वालो ! यह सचाई है, जिसको मैंने विरोध की परवाह न करते हुए निर्भय होकर व्यक्त किया है। यदि कोई व्यक्ति समझता है कि मैं सचाई पर हूँ, तो इस सत्यता को फैलाने में मेरी सहायता करे, और इस सचाई का प्रचार करे और इस संसार में रहते हुए स्वयं प्रसन्नतापूर्वक जीये और दूसरों को जीने दे।

अपनी जात तथा निज स्वरूप जो पूर्ण है, उससे अपना प्रेमका नात जोड़ो। वास्तविक सद्गुरु तुम्हारी अपनी ही जात है बाहर का गुरु तुम्हारी सुरत को, तुम्हारे अपने ही अन्तर, तुम्हारी जातसे मिलाने का प्रयास करता है क्यों भूल भ्रम में पड़कर लुटे जा रहे हो ? अपना धन सम्पत्ति, सन्मान खोकर दूसरों के आश्रित बने हुए हो। यह रहस्य है जो जीवन में मुझको मिला, और मैं निर्भय होकर बताये जा रहा हूँ।

देहली दशहरे का सत्संग। ले० परमदयाल जी

कल देहली से एक सज्जन का पत्र आया। दशहरे के सत्संग के लिये मुझसे पूछा गया। मित्रो ! इस क्रम में मैं परमदयाल मानतवा प्रचारक सभा देहली तथा अन्य सज्जनों से कुछ कहना चाहता हूँ। मुझको यह सत्संग आदि का काम दातादयाल जी ने मेरे अपने ही कल्याण और सार ज्ञान के प्राप्त करने के लिये ही दिया था। क्योंकि मेरा काम हो गया। जिस समझ अनुभव या ज्ञान से मेरा कल्याण हुआ और मेरे भ्रम, संशय और सन्देह निवारण हुए। उसी को दाता दयाल जी की आज्ञानुसार देने या फैलाने में मैंने निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता की और जगत् कल्याण का काम किया। अब मेरी अन्तिम आयु है। शारीरिक रोग अभी रुपये में से दो आने शेष है। डाक्टर का विचार है कि पूर्ण स्वस्थ होने के लिये अभी दो मास और लगेंगे। मैं देहली दशहरा सत्संग में आसकूं या न आसकूं, आप सज्जनों को दशहरे

के सत्संग का प्रबन्ध करना चाहिये, नन्दू भाई जी, पीरेमुगां साह सन्त कृपालसिंह जी आदि, अन्य महापुरुषों को बुलाना चाहिये।

मैं यह आशा रखता हूँ कि दातादयाल जी की समाधि पर भेंट चढ़ाऊं। यथाशक्ति प्रयत्न करूंगा कि इस बार दशहरे के पश्चात राधास्वामी धाम जाऊं।

आज सत्संग में गुरु महिमा का आरम्भ में दिया गया शब्द दुहरा गया।

गुरु को कीजै दण्डवत कोटि कोटि प्रनाम,
कीट न जाने भृंग को, गुरु करलें आप समान।

आप उसे पढ़कर विचार करें और जीवन को साधन सम्पन्न बनायें। सत कबीर की साखी में गुरु अंग के क्रम में इस शब्द में बतलाया गया है कि सत गुरु से क्या मिलता है? यही कि दुख सुख और द्वन्द समाप्त हो जाता है। कबीर साहब को रामानन्द जी गुरु मिले थे। और मुझे महर्षि दातादयाल जी महाराज। जिन की अपार दया और मेहर से मुझे वास्तविक रहस्य मिल गया। इस लिये अच्छा है कि अन्तिम बार उनकी समाधि पर शीश नवाने जाऊं। देखिये! मौज को क्या स्वीकार है।

उस अवस्था को जहां दुख सुख और द्वन्द मिटता है, प्राप्त करना सुगम नहीं। सुगमता तब होती है जब कोई व्यक्ति सचमुच ही खोजी और जिज्ञासू होता है और सही अर्थों में उसके मन में इस संसार से निकलने की चाह होती है। ऐसी दशा में मौज काम बना देती है। स्वयं सच्चे गुरु तक पहुँच हो जाती है। उसकी आज्ञा में रहना और उसका पालन करना अनिवार्य है। मैंने गुरुकी आज्ञा का पालन किया। मेरा कल्यान हो गया मैं आशा करता हूँ कि आप प्रेमीजन भी सच्चे बनकर अपने जीवन की यात्रा को सुख और शान्ति से बितायेंगे। और अपने आपको अपने अन्तर शब्दमे

ठहराने का साधन करते रहेंगे। सत्संग में वाणी के अर्थ को जहां तक हो सके समझने का प्रयत्न करेंगे। मेरे लेख और साहित्य, उस सच्ची समझ को देने का प्रयत्न करते हैं, जिससे कि ऊंची अवस्था प्राप्त हो जाये।

यदि स्वास्थ्य ने आज्ञा दी तो मैं शुक्रवार २१-१०-६६ को सन्ध्या समय होशियारपुर से चलकर शनिवार २२-१०-६६ को देहली पहुँचूंगा। शाम को सत्संग होगा। फिर २३-१०-६६ को प्रातः और सन्ध्या दोनों समय सतसंग और २४-१०-६६ की प्रातः सत्संग नियुक्त कर लें। उसी दिन कानपुर के लिये प्रस्थान हो जायगा। २५ तारीख को कानपुर रहूँगा और २६-१०-६६ को राधास्वामी धाम जाने का विचार है।

कलामे नन्दू

अस्ल आदम की हकीकत जानलो।
जात को अपने जरा पहचान लो।
तब हकीकत का मिलेगा कुछ पता,
मारफत का आयेगा दिल को मजा।
फैज का दर खुल गया फैयाजे रहमत आ गया,
जो गिरा कदमों में दौलत मारफत की पा गया।
उनकी सौहबत से उठालो फैज तुम,
जानना चाहो तो जान लो आपे को तुम॥
तेरे अन्दर है हकीकत यों छुपी।
जिस तरह महिन्दी में सुर्खी है छुपी॥
तुम नहीं उससे जुदा हरगिज कभी।
रहता है तुम में वह हरदम मुस्तफी॥
दे दिया मुर्शिद ने तुमको यों पता।
क्या तुम्हारी इब्तदा है क्या तुम्हारी इन्तहा॥

अब जबां को बन्द कर वह बन्द रह।
अपने ही अन्दर सदा खुरसन्द रह
जब जबां खोला मजा जाता रहा।
गरियत आई मजा फिर कहां रहा॥
चश्म बन्दो गोश बन्दो लब बबन्द।
सिर्रे हक तुझ में है भाई होशमन्द।
राधास्वामी के चरन से मिल रहो।
अपने आपे में सदा तुम गुम रहो॥

सन्त सम्मेलन ११ वां सन ६५ व १२ वाँ सन ६६ के आय व्यय हिसाब का वार्षिक ब्यौरा

राधास्वामी सतसंग हनम कुन्डा वरंगल

आय	सन १९६५	व्यय	
पिछले वर्ष की रोकड़ बाकी	९०-६६	पंडाल	५१३-६२
सत्संगी भाइयों से चन्दा	१४८४-७७	मंजूरियाँ	१७८-८२
गुप्तदान से	९३-००	बिजली	३९३-४०
किराया मकानात	१३२२-४७	निर्माण आदि	३३-८७
कुल जोड़	२९९०-९०	आइस पार्टी	८२-१९
नोट—आय कम होने के कारण		रंग रोगन	१०९-६३
हिसाब का ब्यौरा समय पर नहीं		रेलवे व्यय	२१०-४०
प्रस्तुत किया गया था। अब किराया		चिट्ठी पत्री	१५०-८४
मकानात की वसूलयाबी के पश्चात		विभिन्न व्यय	२२२-४१
प्रकाशित किया जा रहा है। जो चाहें		भंडारा	१०९७-७२
इसकी जांच कर सकते हैं।		जोड़ कुल	२९९०-९०

आय	सन १९६६	व्यय	
पिछले वर्ष की रोकड़ शेष कुछ नहीं		पंडाल	५७१-३०
सत्संगी भाईयों से चन्दा	१५७१-००	बिजली	२००-२५
गुप्तदान	१५०-००	निर्माण आदि	२९९-५१

किराया मकानात	४१६-३६	रंग रोगन	२१७-६८
कुल जोड़	२१४०-३६	आहक पाशी	८६-८७
नोट (१)—यह ब्योरा समय से पूर्व		रेलवे व्यय	२०३-००
ही प्रस्तुत कर दिया है ताकि सत-		चिट्ठी पत्री	१२६-५१
संगी भाई इससे परिचित रहें।		विभिन्न व्यय	२६७-३६
(२) कमरों और मंडप के नि-		मजूरियां	१६१-८५
र्माण का मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं।		जोड़ कुल	२१४०-३६

द० शंकरसिंह मन्त्री

परम दयाल जी। की अमूल्य निधि ॥

तेरी स्तुति हित चित से गाऊं, धन धन धन धन राधास्वामी।
तेरे ध्यान में हिया जिया उमगाऊं, धन धन धन धन राधस्वामी॥
गुरु रूप में प्रगट हुआ जग में, जीवों को चिता के किया मग में।
है विनय तेरा दर्शन पाऊं, धन धन धन धन राधास्वामी॥
तू सब में है सब से न्यारा, तेरा रूप लगे अति ही प्यारा।
तेरा चरण छोड़ नहीं कहीं जाऊं, धन धन धन धन राधास्वामी॥
मंगल मय मंगल की खानी, मंगल स्वरूप मंगल दानी।
क्षण प्रति क्षण मैं तुझको ध्याऊं, धन धन धन धन राधास्वामी॥
तू निशदिन मेरे मन में बसे, अब मन नहीं माया मोह फंसे।
राधास्वामी नाम जप हरषाऊं, धन धन धन धन राधास्वामी॥

आज मानवता मन्दिर के सतसंग में यह शब्द पढ़ा गया। गुरु महाराज, दाता दयाल जी की मनोहर मूर्ति समक्ष आती है। उन की स्तुति हित चितसे गाता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। मौज जो काम कराती है वह करता हूँ। इस शब्द में आया है" जीवों को चिता के किया मग में। मुझे इस मार्ग का पता नहीं था। उन्होंने दया करके मुझे चिता दिया और इस मार्ग को बता दिया।

मानव उस मालिक को मानवीय रूप में आज तक केवल विशेष को छोड़कर पूजता आया है। यहां तक कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश,

और अन्य देवताओं को भी मानवीय रुपमें ही पूजा। ब्रहमा के मुख बना दिये। विष्णु के सिर पर मुकट रख दिया, चार भुजायें बनाकर स्तुति करने लगे। ऐसे ही शिवजी को जटाधारी बना दिया जटा से गंगा बहती है मांथे पर चन्द्रमा है मृगछाला पर विराजमान हैं आदि आदि। इसी प्रकार सतगुरू के रूप को भी प्रत्येक पंथ वाले ने सिंहासन पर बिठाकर, छत्रछाया करदी, अतः उस मालिक कोई न कोई रूप दिया। दाता दयाल जी ने मुझ पर दया की। उसके वास्तविक स्वरूप का पता बताया। जो व्यक्ति उस मालिक को, उस सर्वाधार को, किसी रूप में भी मानता है और उस रूप के अन्तर में दर्शन होते हैं, वह कुल मालिक समस्त संसार का हो नहीं सकता। तुम स्वंय सोचो, बड़ के बीज से बड़ का वृक्ष ही उत्पन्न होगा। मानव के वीरज से मानव ही उत्पन्न होगा। अब यदि यह मान लिया जावे कि वह मालिक केवल मानवीय रूप में ही है। तो यह तो रचना है, यहां सूर्य है, चन्द्रमा है, नवग्रह हैं किन्नर हैं गंधर्व कितने ही ऊपर लाखों सूर्य हैं, लोक हैं लोकान्तर हैं। उनके अन्तर अनेक प्रकार की स्थूल, सूक्ष्म और कारण रचनायें हैं। तो मानवीय रूप वाले मालिक से यह समस्त रचनायें हो नहीं सकतीं। मानवीय रूप वाला खुदा या ईश्वर समस्त रचनाको कैसे बनायेगा। वह जैसा स्वयं है उसका संसार भी वैसा ही बनेगा। इसलिये वह ईश्वर जो मानव को बनाता है, वास्तविक और सच्चा मालिक नहीं हो सकता वह मालिक केवल सूक्ष्म से सूक्ष्म. कारण से कारण पुष्पकी सुगन्ध से भी अधिक पतला. चेतन घनराशि है। उस सच्चे मालिक के दर्शन व मिलाप की ओर मेरी सुरत को दाता दयालजी ने आचार्य पदवी देकर जाने के लिये विवश किया। और वह विवशता मुझे कुल सत्संगियों के अनुभव से हुई। जिन व्यक्तियों ने मेरे स्वरूप को अपने अन्तर प्रकाश में देखा, जिसका प्रकाश सूर्य की भांति था और मैं नितांत अनभिज्ञ था। इसलिये मैं यह मानने के लिये विवश

होगया कि वास्तविक मालिक वह रूप नहीं है जो उनके अन्तर प्रगट होता है या मेरे अन्तर प्रगट होता था। अब अपने आपको उस चेतन के भंडार की ओरलेजाने का प्रयास करता रहता हूँ। यह कृतज्ञता है दाता दयाल जी की, जिन्हों ने मुझे सच्चे मालिक, सच्चे आधार का मार्ग दर्शाया। इसलिये इस शब्द को सुनकर दाता दयाल जी को धन्यवाद देता हूँ और उनके गुन गान करता हूँ।

वास्तविक और सच्चा और आदि गुरू का रूप वह है जो चेतन, शुध्द रूप, रंग, आकृति से भिन्न है। जिनको जीवन में इस चेतन विशेष, निर्मल, शुध्द तत्व तथा देश में प्रवेश होने का अवसर नहीं मिला, वह न मेरी वाणीको समझ सकते हैं और न ही बुद्धि या अनुभव उनकी सहायता कर सकता है। शास्त्र भी यही कहते हैं। गुरु अखंड मंगला कारम है। अखंड कहते हैं जो टुकड़े टुकड़े न हो सके। तो फिर यदि उस तत्व को केवल मानवीय रूप में माना जावे तो आकृति या रूप जो है चाहे स्थूल है, सूक्ष्म है, कारण है, इस तत्व की अखंडता को भंग करके बनता है। इसलिये मुझे अपनी खोज का परिणाम त्रुटिपूर्ण नहीं सिद्ध होता। जब तक इस खंडित संसारमें अर्थात काल और माया देश में मेरा असित्व है, मैं उस शुद्ध स्वरूप, मंगलमय, आनन्ददायक, गुरु मूर्ति, दाता दयाल जी को छोड़ना चाहूँ तो मेरे लिये असम्भव है। केवल उस समय के अतिरिक्त जब मेरी सुरत दाता के, उस मालिक के, शब्द स्वरूप को पकड़कर शरीर और मन को नहीं भूलता। इसलिये गुरु मत में रहते हुए इस संसार में भी आनन्द है, अर्थात शरीर और मन में रहता हुआ मैं गुरुस्वरूप के ध्यान से मंगलमय होता रहता हूँ और शब्द स्वरूपी गुरु को पकड़ कर उस चेतन, निर्मल शुद्ध तत्व से भी मिलता रहता हूँ। और जीवन यात्रा प्रसन्नत पूर्वक बिताता हूँ।

यदि ध्यानपूर्वक आप इस शब्द को पढ़ें तो मेरी रहनी क

इसके अनुकूल पायेंगे। यही कारण है कि मैं उनको कोटानि-कं धन्यवाद देता हूँ। सिवाय उस शुद्ध स्वरूप और शब्द के मेरे उन्मत्त का कोई ठिकाना हो सकता है। कदापि नहीं। इसलिये द.... का गुन, गान चलते फिरते, उठते बैठते, बोलते, चालते, खाते पीते, सोते जागते और एकान्त में करने को विवश हूँ।

मार्ग पर लगाना एक तो यह है जो मैंने वर्णन किया है किन्तु यह मेरे जैसे जीवों के लिये है, जो उस मालिके कुल से मिलने की लालसा रखते हैं। किन्तु जिनको इस संसार में सुख शान्ति की खोज है, उन के लिये भी विभिन्न प्रकार के आदेश, उपदेश कि जीवन किस प्रकार बिताया जाय, दाता दयाल जी के शुद्ध स्वरूप ने वर्णन किया है। उदाहरणतः 'जैसा ख्याल वैसा हाल" "जैसी मति वैसी गति।" 'जैसी करनी वैसी भरनी।" "जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।" तो फिर समस्त संसार के लिये यह शिक्षा है। शुभ संकल्पम् अस्तु। अपने भाव विचार अच्छे रक्खो। आशावादी रहो। निष्काम कर्म करो। पर उपकार करो। प्रेम करो। दूसरों की सहायता करो। सहानुभूति रक्खो। आदि २। यह है वह शान्ति या वस्तु जो मुझे गुरुमत से मिली। चूंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव वर्णन कर जाऊंगा। गुरु ऋण सिर पर था। आदेश था शरीर त्यागने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। जो समझा वह कर दिया। यदि यह बातें समझ में आ जायें तो हमारे धार्मिक भेद भाव, पक्षपात दूर हो सकते हैं। मैंने इस पक्षपात को दूर करने के विचार से यह युक्ती नहीं वर्णन की है। मेरी समझ में यह बात आई है तथा निज अनुभव है कि यह सचाई है और यह सन्तों का मार्ग है। इसलिये मैं संत मत की शिक्षा को ही मानव जाति की मुक्तिदाता समझता हूँ। इस विचार से मैंने यह काम किया है। परिणाम क्या हो मुझे ज्ञात नहीं। मौज जाने। बस।

पन्नोत्तर ठा० पदमसिंह जी हुजूराबाद। परमदयाल जी की ओर से ॥ आपकी राखी मिली।

सतसंग में यह शब्द निकला।

मेरे उर में भरे दुख साल, कब काटोगे दीन दयाल।
मैं भरम रही भौ जाल, अचरण खेल दिखावत काल ॥
कभी करत चांदना दीवा बाल, कभी घोर अंधेरा बांधत पाल
कभी पांच तत्व के रंग दिखाल, कभी शब्द सुनावत डारत जाल ॥
बहु भटकावत जोग संभाल, जोगी भूले ऐसे ख्याल।
मैं भी भटका बहुतक काल, क्या क्या कहुँ मैं अपना हाल ॥
अब सतगुरू मोहि मिले दयाल, कुन्जी दे खोला तिल ताल।
रूप निहारूँ अजब विशाल, शब्द सुनूँ चढ़ बंकी नाल ॥
त्रिकुटी घाट भेद दरसाल, सुन्न मंडल अक्षर परसाल।
देखी नदी चमकती चाल, अचरज लहरें करत बेहाल ॥
बजत जहां छिन छिन करताल, सुनत सुरत काटा जंजाल।
महरम महल न को अटकाल, सतगुरू दया सुफल भई घाल ॥
अब आरत गुरू करूं संभाल, राधास्वामी किया निहाल।
सेत पदम चढ़ मारा काल, मूल मिली और छूटी डाल ॥

पदमसिंह जी तुम बड़े भाग्य शाली हो जीवन का ध्येय पूरा हुआ। इस शब्द को ध्यान पूर्वक पढ़ो। बारम्बार पढ़ो। और विचार करो कि क्या तुम्हारा जीवन इसके साथ मेल नहीं खाता ? तुमने लिखा है कि दाता दयाल जी के समय में उन्होंने तुम्हें चित्त लेटे हुये सुमिरन करने को कहा था। तुमने ऐसा किया २-३ दिवस में ही प्रकाश प्रकट हुआ और कुछ समय तक रहा और आप घबड़ा जाते थे। तत्पश्चात् वैसा प्रकाश फिर कभी नहीं प्रकट हुआ। शब्द सुना देता रहता था।

अब आप लिखते हैं कि २-३ वर्ष से शब्द भी बंद होगया। ह

सुरत शिखा सूत्र तक जा ी है और वापिस आजाती है। आप मुझ से अपनी स्थति अनुसार सम्मति चाहते हैं। यह शब्द स्वामीजी महाराज का है। पोथी सार बचन में अंकित है यहां उन्हों ने स्पष्ट लिखा है कि यह जितने रूप, रंग, रेखायें, फुलवाड़ियां और शब्द हैं, योग आदि हैं, यह सब जंजाल है। किन्तु इस अनुभव के विना मानव को ज्ञान ही नहीं होता। जीवन का आरम्भ अवगति से होता है। और गति में शब्द है, प्रकाश है। मन के भाव विचार हैं। तुमको दाता दय ल जी की दया से अनुभव हो गया। तुम्हारा अपना रूप अनामी है, जहां रूप, रंग, रेखा, प्रकाश और शब्द नहीं है तुम मुझसे अच्छे रहे। अभी मैं प्रकाश और शब्द के मंडल का भ्रमण करता रहता हूँ। विशेष विशेष समय पर वह अन्तिम अवस्था उत्पन्न होती है, जहां प्रकाश और शब्द नहीं है। जिस अवस्था का तुम उल्लेख करते हो उसका प्राप्त होना सौभाग्य की बात है। बात अति सूक्ष्म है, बिना निज अनुभव के समझ बूझ से परे है।

अब कबीर साहब के शब्द से अपनी सन्तुष्टि करलो।

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहां पूरन पुरुष हमारा ॥टेक॥
जहां नहीं सुख दुख साच झूठ नहीं, पाप न पुन्न पसारा।
नहीं दिन रैन चांद नहीं सूरज, बिना ज्योति उजियारा ॥टेक॥
नहीं तहां ज्ञान ध्यान नहीं जप तप, वेद कतेब न बानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, यह सब उहां हैरानी ॥टेक॥
धर नहीं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मांड कछु नाहीं।
पांच तत्व गुन तीन नहीं तहां साखी शब्द न ताहीं ॥टेक॥
मूल न फूल बेल नहीं बीजा, बिना वृक्ष फल सोहै।
आहं सोहं अर्ध उर्ध नाहिं, स्वांसा लेखन को है ॥टेक॥
नहीं निर्गुन नहीं सगुन भाई, नहीं सूक्ष्म स्थूलम।
नहीं अक्षर नहीं अवगति भाई, यह सब जग के भूलम ॥टेक॥

जहां पुरुष तहां कछु नाहीं, कहें कबीर हम जाना।
हमरी सेना लखे जो कोई, पावे पद निर्वाना ॥टेक॥

अब जो कबीर साहब ने निज धाम की अवस्था बताई। वही तुमने अपने पत्र में वर्णन की है। इस पर भी तुमको विश्वास नहीं होता कि तुम्हारा परिणाम कुशलमय है।

जीवन है क्या? "लब खुले और बन्द हुये" आदि में भी वही अवस्था थी। जहां न प्रकाश था, न शब्द था, न संसार था, न रचना थी। अन्त में भी वही होगी। मध्य अवस्था में यह समस्त खेल था। धन्य हैं आप! मैं अपने आप से आपको अच्छा समझता हूँ। आपको सुगम उपाय और विधि बता दी। मैं बहुत चंचल और संशय जनक जीव था। जिसको जितना अधिक भ्रम होता है उसको उतना ही अधिक भ्रम देकर उसका भ्रम निवारण किया जाता है। दाता ने मुझे आदेश दिय था। फकीर! यह काम तुमको देता हूँ। इससे तुम्हारा कल्याण होगा। इस काम के करने से और आप जैसे सन्तों के अनुभव ने मेरी आंखें खोल दीं। आपका जीवन तथा आयु अब दीर्घन होगी कर्म कट गये चल-चलावका समय है कहां जाना है, कहां से हम आये थे? यह भी एक भ्रम था' मैं आपके जीवन से स्पर्धा करता हूँ तुम दूर हो। सम्भव है मेरे शब्दों के अन्तर जो मेरा भाव है आप उसे भली भांति न समझ सकें। तथापि मैं आशा करता हूँ कि समझ जायेंगे।

मेरा स्वास्थ अच्छा है। रुपये में दो आना रोग शेष है। यदि स्वास्थ ने आज्ञा दी तो बसन्त पर आऊंगा, तब आपके दर्शन करूंगा। आपका साधन ठीक, अभ्यास ठीक, सब कुछ ठीक। केवल भ्रम का परदा पड़ा हुआ था। मैंने इस पत्र द्वारा प्रयास किया है कि वह उतर जाय। मुझे विश्वास है कि आप मेरे वास्तविक भाव को समझकर अपने आप में किसी प्रकार की कमी न प्रतीत करेंगे।

मन के चमत्कार । ले० परमदयाल फकीर साहब

कल रात को रेडियो पर सदाए कशमीर सुन रहा था । वहां मूसीतंग चेयरमन चीन के अध्यात्मिक चमत्कारों के विषय में उल्लेख करते हुए सदाए कश्मीर हंसी ठट्ठा उड़ा रहा था चमत्कार यह थे कि एक किसान अन्धा नेत्रहीन था । उसकी आँखों को मूसीतंग ने छुआ और वह प्रकाशवान हो गईं । एक प्रोफेसर लिखता है कि किसी समस्या को हल करना कठिन हो रहा था । वह मूसीतंग का ध्यान करता था । उसकी गहरी समाधि लगने से उसके अन्तर वह समस्यायें हल हो गईं । किसी नदी का पानी उन व्यक्तियों के लिये जो मूसीतंग पर विश्वास रखते थे, मीठा होने लगा । आदि आदि मने सुना । विचार हुआ कि क्या यह गलत है ? हां और नहीं । यह मानव का अपना ही विश्वास है । चूंकि चीन में और किसी ऋषि. मुनी, पीर-पैगम्बर, अवतार, ईश्वर या खुदा का विश्वास तोड़ा हुआ है । किन्तु मानवीय प्रकृति विश्वास करने का भाव अंश प्राकृतिक रूप में रखती है । इसलिये चूकि चेयरमैन मूसीतंग को ही चीन में सबसे बड़ा माना गया है । उसका महत्व बच्चों को पुस्तकों में भी पढ़ाया जाता है । इसलिये जन साधारण उस पर विश्वास रखते हैं । यह नहीं कि वह कुछ करता है । यह सब मानव के अपने ही मन का खेल है । वह कुछ नहीं करता न उसे पता ही होता है । जैसा कि म अपने लेखों में अपने चमत्कारों के सम्बन्ध में लिखता रहता हूँ । प्रतिदिन ऐसी घटनायें होती रहती हैं । रात को यह सुना विचार हुआ कि इसी प्रकार हमारे भारतवर्ष में अनेक धर्म, पन्थ और सम्प्रदाय हैं । कोई किसी पर विश्वास रखता है और कोई किसी पर । प्रत्येक प्राणी को जो कुछ मिलता है वह उसके अपने ही भाव, विचार, श्रद्धा और विश्वास का परिणाम होता है । जन पर विश्वास रखा जाता है वह यदि जीवित हैं और वह उनके विश्वास

और श्रद्धा से जो उनको लाभ पहुँचता है, उसके कारण, जो वह उस पुरुष पर जिस पर वह विश्वास रखते हैं यदि वह उनके इस अज्ञानका लाभ उठाता है तो वह अपराधी है। मानवता और सच्चाई से गिरा हुआ है। इस प्रकार के विचार मेरे मन में आये। यह विचार क्यों आये? इसलिये कि जो व्यक्ति मुझ पर विश्वास रखते हैं या मेरी रेडियेशन लेते हैं बाह्य और आन्तरिक रूप से, उनके अन्तर मेरा रू प्रकट होकर उनकी सहायता करता है। प्रतिदिन कोई न कोई ऐस घटना मेरे समक्ष आती है। चूंकि मैं इससे अनभिज्ञ होता हूँ इ लिये मुझे सच्चाई और वास्तविकता को जो मेरी समझ में आई वर्णन करने का साहस हुआ। इस प्रकार के चमत्कारों के सम्बन्ध में बहुत कुछ अपने लेखों में लिखता रहता हूँ। अब स्वामी जी महाराज की वाणी स्मरण होती है।

जग में घोर अन्धेरा भारी, तन में तम का भंडारा।
जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति देखा, भूल भुलैयां धर मारा॥

यदि मानव जाति को इस सन्त मत राधास्वामी मत, कबीर मत की शिक्षा का सच्चा ज्ञान हो जाता, तो मानव जाति इस बात को समझकर परस्पर बंट न जाती। चीन ने इस प्रकार का प्रोपैगंडा करके अपने देश में अपने वर्तमान शासन की प्रशंसा की और उस पर बल दे रही है इस अज्ञान के चमत्कारों के कारण जो उस शासन से सहमत नहीं हैं उनको दबाया जा रहा है। इसी प्रकार भारतवर्ष में इस प्रकार की प्रत्येक धर्म, पन्थ गद्दीपति प्रोपैगन्डा करके अपने महत्व को व्यक्त कर रहा है। परिणाम परस्पर द्वेष, मति भेद और अनबन हो रही है।

आज प्रातः चार बजे साधन में जाने लगा तो वह रात के रेडियो के शब्द और मेरे विचार मेरे समक्ष फिरने लगे। यद्यपि मैं जानता था, मुझे ज्ञान था, कि यह विचार कल्पित हैं, किन्तु वह मस्तिस्क से निकलते नहीं थे। फिर मैंने उस मालिके कुल जो सब

संसार का आधार है, उसकी ओर ध्यान दिया अर्थात भक्ति का सहारा लिया। तब वह विचार समाप्त हुए और मैं शब्द में लय हो गया। इस अनुभव के आधार पर मुझे यह समझ आई कि इस मन के चक्र से निकलने के लिये एक तो समझ या ज्ञान। यह अपना संसार अपने ही मन का खेल है। और बाह्य संसार उस ब्रह्मांडी मन का खेल है। जिसे सन्तजन काल कहते हैं। किन्तु यदि यही काल है तो ऐसी परिस्थितियों में जब मन पर कोई विचार छा जाता है तो उन महापुरुषों की ज्ञानी की, सुरत उसमें फसती नहीं। किन्तु इस चक्र से निकल नहीं सकती। इसलिये इस ज्ञान के साथ भक्ति पन्थ की आवश्यकता है। और वह भक्ति किसी पुरुष की नहीं बल्कि उस मालिके कुल की है जिसका स्वरूप प्रकाश और शब्द है इसलिये मैंने अपने जीवन के निज अनुभव के आधार पर सचाई और वास्तविकता को व्यक्त किया है और सच्चा रहस्य और सच्चा सार भेद प्रकट किया है, जिससे कि मानव जाति की उलझनें सुलझ जायें और वह इस संसार में काल और माया के देश में रहती हुई अपने आपको निर्बन्ध रख सके।

मानवता मन्दिर के सत्संग में आज प्रातः हुजूर महाराज जी की प्रेम वाणी भाग २ से यह शब्द पढ़ा गया "सुरतिया रंग भरी गुरु सन्मुख उमगत आय" इसमें हुजूर महाराज जी ने स्पष्ट लिखा है कि सार वस्तु शब्द है और इसको प्राप्त करने के लिये मन से जूझना पड़ता है। इसमें वह लिखते हैं।

जब तब माया विघ्न लगावत, काल रहे मन में अटकाय।
तब ही चित्त उदास होय कर, गिरत पड़त धुन रस नहीं पाय॥

यह दशा सब सत्संगियों पर आती है। इसका उपाय उस सतगुरु जो सबका आदि है, अकाल पुरुष है, जाति है उससे प्यार करना है, उसकी भक्ति है यह क्रियात्मक रूप है। संसार को इस ऊंची शिक्षा की आवश्यकता नहीं है वो सांसारिक आवश्यकताओं

को पूरा करना चाहता है। यह आवश्यकतायें मानव के अपने विश्वास और श्रद्धा के अनुसार पूरी होती हैं। कोई किसी को माने, राम को, कृष्ण को, देवी को, देवता को मानने वाला मानव किसी पर विश्वास और सहारा लेने को विवश है। चीनियों का वृतांत तुमको सुना दिया। यदि ईश्वर देवी, देवता छोड़ गये तो चेयरमैन मूसीतंग का ही सहारा लिया। यदि यह रहस्य संसार को मिल जाता तो हमारे बहुत से सांसारिक दुख संकट और झगड़े समाप्त हो जाते।

मैंने मा० मोहन लाल व अन्य सत्संगियों को कहा कि मित्रो मैंने अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कहा है ? सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। इस समय सच्चे ज्ञान की आवश्यकता है, जिससे कि मानव जाति प्रेम प्रीत और मेल जोलसे अपना जीवन प्रसन्नता पूर्वक बिता सकती है उसे बताता हूँ। मुझे कोई दावा नहीं। जीवन सत्यप्रिय रहा है। समस्त आयु खोदी। जो समझा वर्ण करता रहता हूँ। सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि इस मानव जाति का भ्रम, अज्ञान दूर हो और इनमें पारस्परिक प्रेम प्रीत, मेल जोल हो। और मेरा कोई प्रयोजन नहीं। दाता ! मालिके कुल दया करे। कि हम सब के सब इस भवसागर की नैया में प्रसन्नतापूर्वक और शान्तिमय जीवन बिताकर अपने निज स्वरूप को प्राप्त करें। मेरे काम का यही ध्येय है। घसीटा जा रहा हूँ इस ओर। काम के परिणाम की ओर ध्यान नहीं है।

॥ शोक समाचार ॥

श्री आई-सी-नन्दा प्रोफैः पटेल नगर नई दिल्ली के दहावसान पर "मनुष्य बनो" परिवार अत्यन्त शोक प्रकट करता हुआ मालिके कुल से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और परिवार का धैर्य व सन्तोष।

भीम प्रिंटिंगवर्क्स मदार गेट अलीगढ़।

जिन्दगी है खुशनुमा और खुश गवार।
कोई हालत अब नहीं है नागवार॥

पड़े थे ख्वाबो ग़फ़लत के दाम में हम,
सहे ज़माने के रंजो पैहम।
खुली जो आँख अपनी तो हमने देखा,
यह ग़म ग़लत था, यह ग़म ग़लत था॥

चूंकि परम पिता जी और दाता दयाल जी की छत्र छाया मिली इसलिये यह जीवन सफल हुआ। लोक भी बना और परलोक भी बना।

बे.ख़ुदी में बे .ख़ुदा है, और .ख़ुद में है .ख़ुदा।
राज़ वह समझेगा जिसको, सिर्रे अकबर कुछ मिला॥
मन में .ख़ुश रहते हैं हरदम, मिल गया है राज़े हक़।
और .ख़ुशी से काम करते हैं मिला हमको सबक़॥
चाहते हैं दिल से हम, यह .ख़ुशी सबको मिले।
.ख़ुश दिली की बातें सुनकर फिर कली दिल की खिले।
किस भरम में हो पड़े. गुरु से जाकर ज्ञान लो।
मारफ़त का है यह नुक्ता, अपना आपा जान लो॥
आगई अपनी समझ, फिर समझोगे हर बात को।
काम फिर निष्काम होगा, दिन को भी और रात को।

अनेक महात्मा जन कहते रहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को मारो या त्यागो। मैं उनके साथ सहमत नहीं हूँ। मैं यह कहता हूं भाई इनसे यथा योग्य काम लो। क्या कभी हिजड़ों ने भी देश पराजित किये हैं। यदि काम अंग न हो तो संसार की उत्पत्ति कैसे होगी। यदि ममता, मोह न हो तो पालन पोषण कैसे होगा। आदि आदि।

इस लिये मन को, बचन को, कर्म का रोको। काबू करो मारो नहीं।

जब मैं यह लेख लिख रहा था तो एक डाक्टर राजस्थान से सत्संग में आगए। यह अध्यात्म विषय पर बहुत वार्तालाप करने के अभ्यस्त हैं। मैंने उनको यह लेख सुनाया और कहा। डाक्टर साहब आप उन रोगियों में से हैं जो जब तक कि कोई डाक्टर उनको उनके रोग और चिकित्सा के सम्बन्ध में पूर्ण रूपेण विश्वास न करा दे, उस रोगी को लाभ नहीं हो सकता है और न वह औषधि खाता है। आपके लिए कुछ समय तक सत्संग करने की आवश्यकता है। जिसमें आपको रेडियेशन भी मिले और सारभेद भी मिल सके। वह हंसे और कहने लगे आपने ठीक कहा है। मेरा कुटुम्ब गुरु घराने का है किंतु मैं अपने दादा जी व पिता जी की गुरुआई के ढंग से सहमत नहीं हूँ। मेरी बुद्धि विवश करती है कि सर्व प्रथम बौद्धिक शांति मिले, यही रहस्य है। डा० सरदारी लाल जी का प्रश्न बहुत ही उत्तम है परन्तु उसका हल है साधन और सत्संग। वह साधन भी करते हैं। किंतु जिस साधन से मानव बुद्धि से ऊँचा नहीं जा सकता। वह साधन चाहे कोई भी हो, इस रहस्य को हल नहीं कर सकता। मन से जितने भी साधन हैं। चाहें जप हो, तप हो, ध्यान हो या कुछ और यह चूंकि मन से होते हैं और मन में बुद्धि विद्यमान है और बुद्धि चूंकि स्वयं उत्पन्न होती है, इसलिए यह रहस्य बुद्धि से हल न होगा।

इसका उपाय सुरत शब्द योग है। जो अपने अंतर सुरत से आन्तरिक अनहद शब्द को सुनता है और साथ ही फिर किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग करता है तब यह भेद खुलता है। मैं निज अनुभव के आधार पर विवश हूँ कि सुरत शब्द योग को जीवन के समस्त रहस्यों का हल मानूं किंतु यह शब्द योग केवल उनके भाग्य में ही आयेगा जो वास्तविकता के इच्छुक हैं तो बेअंत समझकर संतोष कर लेते हैं या उदासीन हो जाते हैं।

मुद्रक—रामस्वरूप राघव, राघव प्रिंटिंग प्रेस, अलीगढ़।

मनुष्य बनो के नियम

१—शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना, इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक, उन्नति कारक, तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जावेगा।

४—किसी धर्म पन्थ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापनेका अधिकार संपादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने मे पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य जा सकेगी।

९—नमूना ।) आने के टिकट मिलने पर ही भेजा जा सकेगा।

१०—एक वर्ष से कम के ग्राहक नहीं बनाये जायेंगे। जो किसी भी मास से बन सकते हैं। मूल्य समय पर भेजना होगा।

११—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहियें। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखना चाहिये। और पते को तसदीकी भी।

मैनेजर—मुन्शीलाल गोविल (विश्व प्रेमी)

-मनुष्य बनो हिन्दी ||=)
-जागृत जीवन |||)
-मानवधर्मप्रकाश उर्दू १||) हिंदी|||)
-मन्त मत सार हिन्दी १)
-फकीर शब्दावली ,, ||=)
-आत्मिक आदर्श ,, |||)
-राधास्वामी मत |=)
-आकाशी रचना उ. ||) हिंदी ||)
-सांई की मौज व सार बचन ||)
-शब्द सार ,, |||)
-मनोकामना देवी ,, |=)
-जीवनी दाता दयाल उर्दू ५). ६)
-आवागमन उर्दू |||) हिन्दी १)
-सांई की सदा ,, ||)
-सांई के सौ ख्याल हिन्दी ||)
-सचाई ,, उर्दू |)
-विष्णु संहिता हिन्दी १||)
-शिव संहिता ,, १||)
-नाम महात्म ,, १)
-दयाल संहिता उर्दू |||)
-सुमेरु पर्वत हिन्दी १||)
-दाता दयाल शब्द संग्रह हिंदी ||=
-योगी हिन्दी)
-शकुन विद्या हिन्दी =)
-राम अवतार तिरंगा =)
-परमार्थ सुधार हिन्दी |||)
-विश्व शान्ति हिन्दी |)
-भाग्य को बदाओ हिन्दी |)
-निष्कलंक अवतार हिन्दी उर्दू ||)
-विश्वहितैषी उ १||) विश्वप्रेम |||)
-Key to Freedom Eng. 1/-
-जगत कल्याण, जगत विस्तार,
-जगत उद्धार उर्दू २) १||) १|)

Regd. No. L. 606

R. S.

कृपया न मिलने पर निम्न पते पर लौटा दें
प्रा० संख्या "मनुष्य बनो कार्यालय"
दयाल कम्पाउन्ड, पेच जामा जी अलीगढ़ (उ०प्र०)

सर्व/श्रीमान

३४–यथार्थ शान्ति सन्देश उर्दू ||) हिन्दी १)
३५–कानूने ख्याल हिन्दी १)

36-Message of Peace	0-10-0
37-Truth & Reality	0-6-0
38-Independence Day Messages	0-12-0
39-Real Independence	0-4-0
40-Letters of Data Dayal	0-12-0
41-Light on Anand Yog	3-0-0

प्रकाशक व मैनेजिंग ऐडीटर
मुन्शीलाल गोविल (विश्व प्रेमी)
"मनुष्य बनो कार्यालय"
दयाल कम्पान्ड, पेच जामा जी
यू० एम० जैन गर्ल्स इन्टर कालिज अलीगढ़